तुलसी
के चमत्कारी गुण
श्रीराम शर्मा आचार्य

तुलसी के चमत्कारी गुण

जब से संसार में सभ्यता का उदय हुआ है, मनुष्य रोग और औषधि इन दोनों शब्दों को सुनते आए हैं। जब हम किसी शारीरिक कष्ट का अनुभव करते हैं तभी हमको 'औषधि' की याद आ जाती है, पर आजकल औषधि को हम जिस प्रकार 'टेबलेट', 'मिक्चर', 'इंजेक्शन', 'कैप्सूल' आदि नए-नए रूपों में देखते हैं, वैसी बात पुराने समय में न थी। उस समय सामान्य वनस्पतियाँ और कुछ जड़ी-बूटियाँ ही स्वाभाविक रूप में औषधि का काम देती थीं और उन्हीं से बड़े-बड़े रोग शीघ्र निर्मूल हो जाते थे, तुलसी भी उसी प्रकार की औषधियों में से एक थी।

जब तुलसी के निरंतर प्रयोग से ऋषियों ने यह अनुभव किया कि यह वनस्पति एक नहीं सैकड़ों छोटे-बड़े रोगों में लाभ पहुँचाती है और इसके द्वारा आसपास का वातावरण भी शुद्ध और स्वास्थ्यप्रद रहता है तो उन्होंने विभिन्न प्रकार से इसके प्रचार का प्रयत्न किया। उन्होंने प्रत्येक घर में तुलसी का कम से कम एक पौधा लगाना और अच्छी तरह से देखभाल करते रहना धर्म कर्त्तव्य बतलाया। खास-खास धार्मिक स्थानों पर 'तुलसी कानन' बनाने की भी उन्होंने सलाह दी, जिसका प्रभाव दूर तक के वातावरण पर पड़े।

धीरे-धीरे तुलसी के स्वास्थ्य प्रदायक गुणों और सात्विक प्रभाव के कारण उसकी लोकप्रियता इतनी बढ़ गई कि लोग उसे भक्ति भाव की दृष्टि से देखने लगे, उसे पूज्य माना जाने लगा। इस प्रकार तुलसी की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ गई, क्योंकि जिस वस्तु का प्रयोग श्रद्धा और विश्वास के साथ किया जाता है, उसका प्रभाव बहुत शीघ्र और अधिक दिखलाई पड़ता है। हमारे यहाँ के वैद्यक ग्रंथों में कई स्थानों पर चिकित्सा कार्य के लिए जड़ी-बूटियाँ संग्रह करते समय उनकी स्तुति-प्रार्थना करने का

विधान बतलाया गया है और यह भी लिखा है कि उनको अमुक तिथियों या नक्षत्रों में तोड़कर या काटकर लाया जाए। इसका कारण यही है कि इस प्रकार की मानसिक भावना के साथ ग्रहण की हुई औषधियाँ लापरवाही से बनाई गई दवाओं की अपेक्षा कहीं अधिक लाभप्रद होती हैं।

कुछ लोगों ने यह अनुभव किया कि तुलसी केवल शारीरिक व्याधियों को ही दूर नहीं करती, वरन मनुष्य के आंतरिक भावों और विचारों पर भी उसका कल्याणकारी प्रभाव पड़ता है। हमारे धर्मग्रंथों के अनुसार किसी भी पदार्थ की परीक्षा केवल उसके प्रत्यक्ष गुणों से ही नहीं की जानी चाहिए, वरन उसके सूक्ष्म और कारण प्रभाव को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। तुलसी के प्रयोग से ज्वर, खाँसी, जुकाम आदि जैसी अनेक बीमारियों में तो लाभ पहुँचता ही है, उससे मन में पवित्रता, शुद्धता और भक्ति की भावनाएँ भी बढ़ती हैं। इसी तथ्य को लोगों की समझ में बैठाने के लिए शास्त्रों में कहा गया है—

त्रिकाल बिनता पुत्र प्रयाश तुलसी यदि।
विशिष्यते कायशुद्धिश्चान्द्रायण शतं बिना॥
तुलसी गन्धमादाय यत्र गच्छन्ति मारुतः।
दिशो दशश्च पूतास्तुर्भूत ग्रामश्चतुर्विधः॥

अर्थात, 'यदि प्रातः, दोपहर और संध्या के समय तुलसी का सेवन किया जाए तो उससे मनुष्य की काया इतनी शुद्ध हो जाती है जितनी अनेक बार चांद्रायण व्रत करने से भी नहीं होती। तुलसी की गंध वायु के साथ जितनी दूर तक जाती है, वहाँ का वातावरण और निवास करने वाले सब प्राणी पवित्र-निर्विकार हो जाते हैं।'

तुलसी की अपार महिमा

तुलसी की यह महिमा, गुण-गरिमा केवल कल्पना ही नहीं है, भारतीय जनता हजारों वर्षों से इसको प्रत्यक्ष अनुभव करती आई है और इसलिए प्रत्येक देवालय, तीर्थस्थान और सद्गृहस्थों के घरों

में तुलसी को स्थान दिया गया है। वर्तमान स्थिति में भी कितने ही आधुनिक विचारों के देशी और विदेशी व्यक्ति उसकी कितनी ही विशेषताओं को स्वीकार करते हैं और वातावरण को शुद्ध करने के लिए तुलसी के पौधों के गमले अपने बँगलों और कोठियों पर रखने की व्यवस्था करते हैं, फिर तुलसी का पौधा जहाँ रहेगा सात्विक भावनाओं का विस्तार तो करेगा ही।

इसलिए हम चाहे जिस भाव से तुलसी के संपर्क में रहें, हमको उससे होने वाले शारीरिक, मानसिक और आत्मिक लाभ न्यूनाधिक परिमाण में प्राप्त होंगे ही। तुलसी से होने वाले इन सब लाभों को समझकर पुराणकारों ने सामान्य जनता में उसका प्रचार बढ़ाने के लिए अनेक कथाओं की रचना कर डाली, साथ ही उसकी षोडशोपचार पूजा के लिए भी बड़ी लंबी-चौड़ी विधियाँ अपनाकर तैयार कर दीं। यद्यपि इन बातों से अशिक्षित जनता में अनेक प्रकार के अंधविश्वास भी फैलते हैं और तुलसी-शालिग्राम विवाह के नाम पर अनेक लोग हजारों रुपये खरच कर डालते हैं, पर इससे हर स्थान पर तुलसी का पौधा लगाने की प्रथा अच्छी तरह फैल गई। पुराणकारों ने तुलसी में समस्त देवताओं का निवास बतलाते हुए यहाँ तक कहा है—

तुलसस्यां सकल देवाः वसन्ति सततं यतः।
अतस्तामचयेल्लोकः सर्वान्देवानसमर्चयन॥

अर्थात, तुलसी में समस्त देवताओं का निवास सदैव रहता है। इसलिए जो लोग उसकी पूजा करते हैं, उनको अनायास ही सभी देवों की पूजा का लाभ प्राप्त हो जाता है।

तत्रे कस्तुलसी वृक्षस्तिष्ठति द्विज सत्तमा।
यत्रेव त्रिदशा सर्वे ब्रह्मा विष्णु शिवादय॥

जिस स्थान पर तुलसी का एक पौधा रहता है, वहाँ पर ब्रह्मा, विष्णु और शिव आदि समस्त देवता निवास करते हैं।

पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंङ्गाद्या सरितस्तथा।
वासुदेवादयो देवास्तिष्ठन्ति तुलसी दले॥

'तुलसी पत्रों में पुष्कर आदि तीर्थ, गंगा आदि सरिताएँ और वासुदेव आदि देवों का निवास होता है।'

रोपनात् पालनात् सेकात् दर्शनात्स्पर्शनान्नृणाम्।
तुलसी दह्यते पाप वाङ्मनः काय संचितम्॥

'तुलसी के लगाने एवं रक्षा करने, जल देने, दर्शन करने, स्पर्श करने से मनुष्य के वाणी, मन और काया के समस्त दोष दूर होते हैं।'

सर्वोषधि रसेन व पुराह अमृत मन्थने।
सर्वसत्वोपकाराय विष्णुना तुलसी कृताः॥

प्राचीनकाल में 'अमृत मंथन' के अवसर पर समस्त औषधियों और रसों (भस्मों) से पहले विष्णु भगवान ने समस्त प्राणियों के उपकारार्थ तुलसी को उत्पन्न किया।

तुलसी की रोगनाशक शक्ति

इस प्रकार प्राचीन ग्रंथकारों ने तुलसी की महिमा को सर्वसाधारण के हृदय में जमाने के लिए उसकी बड़ी प्रशंसा की है और उसके अनेक लाभ बतलाए गए हैं। इनमें से शरीर संबंधी गुण अर्थात तुलसी की रोगनाशक शक्ति तो प्रत्यक्ष ही है और विशेषतः कफ, खाँसी, ज्वर संबंधी औषधियों के साथ तुलसी को भी सम्मिलित करने का विधान है। भारतीय चिकित्सा विधान में सबसे प्राचीन और मान्य ग्रंथ चरक संहिता में तुलसी के गुणों का वर्णन करते हुए कहा गया है—

हिक्काज विषश्वास पार्श्व शूल विनाशिनः।
पित्तकृतत्कफवातघ्न सुरसः पूर्ति गन्धहा॥

अर्थात 'सुरसा (तुलसी) हिचकी, खाँसी, विष विकार, पसली के दरद को मिटाने वाली है। इससे पित्त की वृद्धि और दूषित कफ तथा वायु का शमन होता है, यह दुर्गंध को भी दूर करती है।'

दूसरे प्रसिद्ध ग्रंथ 'भाव प्रकाश' में कहा गया है—

तुलसी कटुका तिक्ता हृदयोष्णा दाहिपित्तकृत।
दीपना कष्टकृच्छ् स्त्रापाश्र्व रुककफवातजित॥

तुलसी कटु, तिक्त हृदय के लिए हितकर, त्वचा के रोगों में लाभदायक, पाचन शक्ति को बढ़ाने वाली, मूत्रकृच्छ के कष्ट को मिटाने वाली है, यह कफ और वात संबंधी विकारों को ठीक करती है।

आयुर्वेद के ज्ञाताओं ने समस्त औषधियों और जड़ी-बूटियों के गुण जानने के लिए 'निघंटु' ग्रंथों की रचना की है, उसमें भी तुलसी के गुण विस्तापूर्वक लिखे गए हैं। 'धन्वन्तरि निघंटु' में कहा गया है—

तुलसी लघुरुष्णाच्य रुक्ष कफ विनाशिनी।
क्रिमिदोषं निहन्त्यैषा रुचि कृद्बह्निदीपनी॥

'तुलसी हलकी उष्ण, रूक्ष, कफ दोषों और कृमि दोषों को मिटाने वाली और अग्निदीपक होती है।'

दूसरे 'राजबल्लभ निघंटु' में कहा गया है—

तुलसी पित्तकृद्वाता क्रिमी दौर्गन्धनाशिनी।
पश्विशुलापूरतिश्वास कास हिक्काविकारजित॥

'तुलसी पित्तकारक तथा वात कृमि और दुर्गंध को मिटाने वाली है, पसली के दरद, खाँसी, श्वास, हिचकी में लाभकारी है।'

'कैयदेव निघंटु' में तुलसी के गुणों का इस प्रकार वर्णन किया गया है—

तुलसी तुरवातिक्ता तीक्ष्णोष्णा कटुपाकिनी।
रुक्षा हृद्या लघुः कटुचौदाहपिताग्नि वर्द्धिनी॥
जयेद बात कफ श्वासा कारुहिध्मा बमिकृमनीन।
दौरगन्ध्य पार्वरूक कुष्ट विषकृच्छन स्त्राद्गगदः॥

'तुलसी तीक्ष्ण, कटु, कफ, खाँसी, हिचकी, उलटी, कृमि, दुर्गंध, पार्श्व, शूल, कोढ़, आँखों की बीमारी आदि में लाभकारी है।'

तुलसी प्रकृति के अनुकूल औषधि है

यद्यपि इन ग्रंथों में तुलसी को तीक्ष्ण भी लिखा है, पर उसकी तीक्ष्णता केवल विशेष प्रकार की और छोटे कृमियों को दूर करने तक ही सीमित है। जिस प्रकार वर्तमान समय की कीटाणुनाशक

और दुर्गंध मिटाने वाली औषधियाँ कुछ भी अधिक हो जाने से हानि भी हो सकती है, वैसी बात तुलसी में नहीं है। यह एक घरेलू वनस्पति है, जिसके प्रयोग में किसी प्रकार का खतरा नहीं रहता। इस दृष्टि से वह अन्यान्य डॉक्टरी और वैद्यक औषधियों से भी श्रेष्ठ सिद्ध होती है। तुलसी को प्रायः भगवान के प्रसाद, चरणामृत, पंचामृत आदि में मिलाकर सेवन किया जाता है, इसलिए वह एक प्रकार से भोजन का अंश बन जाती है जबकि अन्य औषधियों को तरह-तरह की रासायनिक प्रक्रियाएँ करके व्यवहार में लाया जाता है, जिससे उनके स्वाभाविक गुणों में बहुत अंतर पड़ जाता है। वहाँ तुलसी प्रायः ताजा और प्राकृतिक रूप से पाई जाती है, उससे शरीर में किसी प्रकार का दूषित विजातीय तत्त्व उत्पन्न होने की संभावना नहीं रहती। यदि कभी उसके साथ दो-चार अन्य पदार्थ मिलाए जाते हैं तो वे सौंठ, कालीमिर्च, अजबाइन, बेलगिरी, नीम की कौंपल, पीपल, इलायची, लौंग आदि ऐसी चीजें होती हैं जो प्रायः हर घर में रहती और नित्य व्यवहार में आया करती हैं।

इसलिए औषधियों के रूप में सेवन करने पर भी तुलसी की कोई विपरीत प्रतिक्रिया नहीं होती, न उसके कारण शरीर में किसी प्रकार के दूषित तत्त्व एकत्रित होते हैं। तुलसी स्वाभाविक रूप से शारीरिक यंत्रों की क्रिया को सुधारती है और रोग को दूर करने में सहायता पहुँचाती है। डॉक्टरों के तीव्र इंजेक्शन जिनमें कई प्रकार के विष भी हुआ करते हैं और वैद्यों की भस्मों की तरह उससे किसी तरह के कुपरिणाम या प्रतिक्रिया की आशंका नहीं होती। वह तो एक बहुत सौम्य वनस्पति है, जिसके दस-पाँच पत्ते लोग चाहे जब चबा लेते हैं, पर उनसे किसी को हानि होते नहीं देखी गई।

तुलसी की कई जातियाँ

यद्यपि सामान्य लोग तुलसी के दो भेदों को जानते हैं, जिनको 'रामा' और 'श्यामा' कहा जाता है। 'रामा' के पत्तों का रंग हलका होता है, जिससे उसका नाम गौरी भी पड़ गया है। श्यामा अथवा कृष्ण तुलसी के पत्तों का रंग गहरा होता है और उसमें कफनाशक

गुण अधिक होता है, इसलिए औषधि के रूप में प्रायः कृष्ण तुलसी का ही प्रयोग किया जाता है, क्योंकि उसकी गंध और रस में तीक्ष्णता होती है। इस पुस्तक में आगे चलकर तुलसी चिकित्सा के जो प्रयोग लिखे गए हैं, उनमें जब तक स्पष्ट रूप से अन्य प्रकार की तुलसी का उल्लेख न हो तब तक उसका आशय कृष्ण तुलसी से ही समझना चाहिए।

तुलसी की दूसरी जाति 'वन तुलसी' है, जिसे 'कठेरक' भी कहा जाता है। इसकी गंध घरेलू तुलसी की अपेक्षा बहुत कम होती है और इसमें विष का प्रभाव नष्ट करने की क्षमता विशेष होती है। रक्त दोष, कोढ़, चक्षु रोग और प्रसव की चिकित्सा में भी यह विशेष उपयोगी होती है। तीसरी जाति को 'मरूवक' कहते हैं। 'राजमार्तण्ड' ग्रंथ के मतानुसार हथियार से कट जाने या रगड़ लगकर घाव हो जाने पर इसका रस लाभकारी होता है। किसी विषैले जीव के डंक मार देने पर भी इसको लगाने से आराम मिलता है। चौथी 'बरबरी' या 'बुबई-तुलसी' होती है, जिसकी मंजरी की गंध अधिक तेज होती है। बीज, जिनको यूनानी चिकित्सा पद्धति हकीमी में तुख्म रेहाँ कहते हैं। बहुत अधिक बाजीकरण गुणयुक्त माने गए हैं। वीर्य को गाढ़ा बनाने के लिए उनका प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त और दो-एक जातियाँ विभिन्न प्रदेशों में होती हैं। इन सबमें तीव्र गंध होती है और कृमिनाशक गुण पाया जाता है। अब हम विभिन्न व्याधियों में तुलसी के कुछ चुने हुए प्रयोग नीचे देते हैं।

सब प्रकार के ज्वर

भारतवर्ष के अनेक भागों में मलेरिया का प्रकोप विशेष रूप से पाया जाता है। यह बरसा ऋतु के पश्चात मच्छरों के काटने से फैलता है। तुलसी के पौधों में मच्छरों को दूर भगाने का गुण और उसकी पत्तियों का सेवन करने से मलेरिया का दूषित तत्त्व दूर हो जाता है। इसलिए हमारे यहाँ ज्वर आने पर तुलसी और कालीमिर्च का काढ़ा बनाकर पी लेना सबसे सुलभ और सरल उपचार माना

जाता है। डॉक्टर लोग इसके लिए 'कुनैन' का प्रयोग करते हैं, पर कुनैन इतनी गरम चीज है कि उसके सेवन से बुखार दूर हो जाने पर भी अनेक बार अन्य उपद्रव पैदा हो जाते हैं। उनसे खुश्की, गरमी, सिर चकराना, कानों में साँय-साँय शब्द सुनाई पड़ना आदि दोष उत्पन्न हो जाते हैं। इसको मिटाने के लिए दूध-संतरा आदि रस जैसे पदार्थों के सेवन की आवश्यकता होती है, जिनका सामान्य जनता को प्राप्त हो सकना कठिन ही होता है। ज्वर को दूर करने के लिए वैद्यक ग्रंथों के कुछ नुस्खे इस प्रकार हैं—

(१) जुकाम के कारण आने वाले ज्वर में तुलसी के पत्तों का रस अदरक के रस के साथ शहद मिलाकर सेवन करना चाहिए।

(२) तुलसी के हरे पत्ते एक छटांक और कालीमिर्च, आधा छटांक दोनों को एक साथ बारीक पीसकर झरबेरी के बराबर गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लें। इसमें से दो गोलियाँ तीन-तीन घंटे के अंतर से जल के साथ सेवन करने से मलेरिया अच्छा हो जाता है।

(३) तुलसी के पत्ते ११, कालीमिर्च ९, अजबाइन २ माशा, सौंठ ३ माशा, सबको पीसकर एक छटांक पानी में घोल लें। तब एक कोरा मिट्टी का प्याला, सिकोरा या कुल्हड़ आग में खूब तपाकर उसमें उक्त मिश्रण को डाल दें और उसकी भाप रोगी के शरीर को लगाएँ। कुछ देर बाद जब वह गुनगुना, थोड़ा गरम रह जाए तो जरा-सा सेंधा नमक मिलाकर पी लिया जाए। इससे सब तरह के बुखार जल्दी ही दूर हो जाते हैं।

(४) पुदीना और तुलसी के पत्तों का रस एक-एक तोला लेकर उसमें ३ माशा खाँड़ मिलाकर सेवन करें, इससे मंद-ज्वर में बहुत लाभ होता है।

(५) शीत ज्वर में तुलसी के पत्ते, पुदीना, अदरक तीनों आधा-आधा तोला लेकर काढ़ा बनाकर पिएँ।

(६) तुलसी के पत्ते और काले सहजन के पत्ते मिलाकर पीस लें। उस चूर्ण का गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से विषम ज्वर दूर होता है।

(७) मंद ज्वर में तुलसी पत्र आधा तोला, काली दाख दस दाना, कालीमिर्च एक माशा, पुदीना एक माशा, इन सबको ठंडाई की तरह पीस-छानकर मिश्री मिलाकर पीने से लाभ होता है।

(८) विषम ज्वर और पुराने ज्वर में तुलसी के पत्तों का रस एक तोला पीते रहने से लाभ होता है।

(९) तुलसी पत्र एक तोला, कालीमिर्च एक तोला, करेले के पत्ते एक तोला, कुटकी ४ तोला, सबको खरल में खूब घोंटकर मटर के बराबर गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लें। ज्वर आने से पहले और सायंकाल के समय दो-दो गोली ठंडे पानी के साथ सेवन करने से जाड़ा देकर आने वाला बुखार दूर होता है। मलेरिया के मौसम में यदि स्वस्थ मनुष्य भी एक गोली प्रतिदिन सुबह लेता रहे तो ज्वर का भय नहीं रहता। ये गोलियाँ दो महीने से अधिक रखने पर गुणहीन हो जाती हैं।

(१०) तुलसी पत्र और सूरजमुखी की पत्ती पीस-छानकर पीने से सब तरह के ज्वरों में लाभ होता है।

(११) कफ के ज्वर में तुलसी पत्र, नागरमोंथा और सौंठ बराबर लेकर काढ़ा बनाकर सेवन करें।

(१२) जो ज्वर सदैव बना रहता हो उसमें दो छोटी पीपल पीसकर तथा तुलसी का रस और शहद मिलाकर गुनगुना करके चाटें।

(१३) तुलसी पत्र और नीम की सींक का रस बराबर लेकर थोड़ी कालीमिर्च के साथ गुनगुना करके पीने से क्वार के महीने का फसली बुखार दूर होता है।

(१४) सामान्य हरारत तथा जुकाम में तुलसी की थोड़ी-सी पत्तियों का चाय की तरह काढ़ा बनाकर उसमें दूध और मिश्री मिलाकर पीने से लाभ होता है। कितने ही जानकार व्यक्तियों ने आजकल बाजार में प्रचलित चाय की अपेक्षा तुलसी की चाय को हितकर बताया है।

खांसी और जुकाम

भारतीय चिकित्सक प्राचीनकाल से खांसी-जुकाम आदि में तुलसी का प्रयोग करते आए हैं। 'चरक संहिता' (चिकित्सा स्थान अ० ५८-७८) के अनुसार खांसी में छोटी मक्खी के शहद के साथ तुलसी का रस विशेष लाभदायक होता है। 'चरक' में भी यही कहा गया है कि दमा (श्वांस) को ठीक करने वाली प्रमुख औषधियों में से तुलसी एक है।

(१) साधारण खांसी में तुलसी के पत्ते और अडूसा के पत्तों का रस बराबर मात्रा में मिलाकर सेवन करने से शीघ्र लाभ होता है।

(२) तुलसी के बीज, गिलोय, सौंठ, कटेरी की जड़ समान भाग पीसकर छान लें, इसमें से आधा माशा चूर्ण शहद के साथ खाने से खांसी में लाभ होता है।

(३) कुकर खांसी में तुलसी मंजरी और अदरक को बराबर लेकर पीसकर शहद में मिलाकर चाटें।

(४) तुलसी की मंजरी, बच, पीपल आधा-आधा तोला और मिश्री दो तोला लेकर एक सेर पानी में औटाएँ, जब आधा रह जाए तो छानकर रख लें। इसको एक-एक छटांक दिन में कई बार सेवन करने से कुकर खांसी में लाभ होता है।

(५) छोटे बच्चों की खांसी में तुलसी की पत्ती ४ रत्ती और ककड़ासिंघी तथा अतीस दो-दो रत्ती शहद में मिलाकर माँ के दूध के साथ देने से फायदा होता है।

(६) तुलसी का रस और मुलहठी का सत मिलाकर चाटने से खांसी दूर होती है।

(७) तुलसी और कसौंदी की पत्ती का रस मिलाकर सेवन करने से खांसी में लाभ होता है।

(८) चार-पाँच लौंग भूनकर तुलसी पत्र के साथ लेने से सब तरह की खांसी में लाभ पहुँचता है।

(९) सूखी खांसी में अगर गला बैठ गया हो तो तुलसी पत्र, खसखस (पोस्त का दाना) तथा मुलहठी पीसकर समान भाग लाल बूरा या खांड मिलाकर गुनगुने पानी के साथ सेवन करें।

(१०) तुलसी पत्र आधा तोला, गेहूँ का चोकर एक तोला, मुलहठी आधा तोला पावभर पानी में पकाएँ। आधा रह जाने पर छानकर थोड़ा देशी बूरा या खांड मिलाकर पीने से शीघ्र ही खांसी दूर होती है।

(११) तुलसी पत्र, हलदी और कालीमिर्च का उपर्युक्त विधि से बनाया काढ़ा भी जुकाम और हरारत में लाभ करता है।

आँख, नाक और कानों के रोग

मनुष्य शरीर में ये तीनों इंद्रियाँ बहुत महत्त्वपूर्ण और साथ ही कोमल हुआ करती हैं। अतएव इनकी किसी व्याधि में एकाएक तीव्र औषधि का व्यवहार करना उचित नहीं। तुलसी ऐसी सौम्य और निरापद औषधि है जो अपने सूक्ष्म प्रभाव से इन अंगों को शीघ्र नीरोग कर सकती है। इस संबंध में 'चरक संहिता' का निम्न वचन विशेष महत्त्वपूर्ण है—

गोरवे शिरसे शूले पीनसे अर्धभेदके।
क्रिमी व्याधावपस्मारे घ्राणनाशे प्रपोहके॥

अर्थात 'तुलसी का प्रयोग मस्तक में एकत्रित दोषों को दूर करके सिर का भारीपन, मस्तक शूल, पीनस, आधा सीसी, कृमि, मृगी, सूँघने की शक्ति नष्ट होने आदि को ठीक कर देता है।'

(१) तुलसी के बीज २ माशा, रसौत २ माशा, आमा हलदी २ माशा, अफीम चार रत्ती, इन सबको घीग्वार के गूदे में मिलाकर पीस लें। इसका आखों के चारों ओर लेप करने से दरद और सुर्खी में लाभ होता है।

(२) केवल तुलसी का रस निकालकर आँखों में आँजने से भी नेत्रों की पीड़ा तथा अन्य रोग दूर होते हैं। यदि तुलसी के रस में थोड़ा असली शहद मिलाकर छानकर शीशी में रख लें तो वह आँखों में टपकाए जाने वाले उत्तम 'आईड्राप' औषधि का काम दे सकती है।

(३) आँखों में सूजन और खुजली की शिकायत होने पर तुलसी पत्रों का काढ़ा बनाकर उसमें थोड़ी-सी फिटकरी पीसकर मिला दें। जब काढ़ा गुनगुना रहे तभी साफ रुई को उसमें भिगोकर

बार-बार पलकों को सेकें। पांच-पांच मिनट में दो बार सेकने से सूजन कम होकर आँखें खुल जाती हैं।

(४) अगर कान में दरद हो या श्रवण-शक्ति में कुछ गड़बड़ी जान पड़ती हो तो तुलसी का रस जरा-सा गुनगुना करके दो-चार बूँद टपकाने से आराम होता है। कान बहता हो या पीव पड़ जाने से दुर्गंध आती हो तो प्रतिदिन रस डालते रहने से लाभ होता है।

(५) अगर नाक के भीतर दरद होता हो, किसी तरह का जख्म अथवा फुंसी हो गई हो तो तुलसी के पत्तों को खूब बारीक पीसकर सूँघनी की तरह सूँघने से आराम होता है।

(६) नाक में पीनस रोग होकर कीड़े पड़ जाने पर और दुर्गंध आने पर वन तुलसी के पत्तों का रस और कपूर मिलाकर नस्य लेना चाहिए।

पुरुषों के वीर्य और मूत्र संबंधी रोग

तुलसी के बीज अधिक लसदार और लेपक होते हैं और मूत्र संस्थान के विकारों में दिए जाते हैं। तुलसी की जड़ को भी बहुत अधिक स्तंभन गुण युक्त बतलाया गया है। ये बीज बहुत जल्द लुआव छोड़ते हैं और थोड़ी ही देर में लसदार झिल्ली के रूप में बदल जाते हैं, इसलिए इनको गुड़ जैसी किसी चीज में मिलाकर खाते हैं या पानी में घोलकर पीते हैं। वैसे तुलसी के पत्ते भी वीर्य दोषों को मिटाने में बहुत उपयोगी हैं।

(१) तुलसी की जड़ को बारीक पीसकर सुपाड़ी की जगह पान में रखकर खाया जाए तो वीर्य पुष्ट होता है और स्तंभन शक्ति बढ़ती है।

(२) तुलसी के बीज या जड़ का चूर्ण पुराने गुड़ में मिलाकर ३ माशा प्रतिदिन दूध के साथ सेवन करने से पुरुषत्व की वृद्धि होती है।

(३) तुलसी के बीज ५ तोला, मूसली ४ तोला, मिश्री ६ तोला लेकर पीसकर मिला लें। इस चूर्ण को प्रतिदिन ३ माशा गाय के दूध के साथ सेवन करने से वीर्य संबंधी निर्बलता में आशाजनक सुधार होता है।

(४) सुजाक की बीमारी में तुलसी के बीज, छोटी इलाइची के दाने और कलमी शोरा समान भाग मिलाकर पीस लें। इस चूर्ण को दो-तीन रत्ती खाकर दूध से दुगुना पानी मिली हुई लस्सी जितनी पी जा सके उतनी पीने से बहुत लाभ होता है। लस्सी में चीनी आदि कोई अन्य चीज नहीं मिलानी चाहिए।

(५) उपदंश रोग में तुलसी के बीज पानी में महीन पीसकर लुगदी बना लें। इससे दूना नीम का तेल लेकर दोनों को आग पर पकाओ। जब लुगदी जलकर काली पड़ जाए तब उसे छानकर तेल को ठंडा कर लें और उपदंश के घावों पर लगाएँ, यह तेल अन्य प्रकार के घावों पर भी बहुत लाभ पहुँचाता है।

(६) मूत्र दाह की शिकायत में पावभर दूध और डेढ़ पाव पानी मिलाएँ और उसमें दो-तीन तुलसी पत्र का रस डालकर पी जाएँ।

(७) वीर्य की निर्बलता के लिए तुलसी के बीज नौ रत्ती और खाँड़ का पुराना शीरा १ रत्ती मिलाकर प्रातः-सायं सेवन करें।

(८) रात को तुलसी के ६ माशा बीज पावभर पानी में भिगो दें और सुबह उनको खूब मिलाकर ठंडाई की तरह पी जाएँ। इसके लगातार सेवन से प्रमेह, धातु क्षीणता, मूत्र-कृच्छ आदि में लाभ होता है।

स्त्रियों के विशेष रोग

तुलसी के बीजों में जो लस और लेपक गुण होता है, वह पुरुषों की जननेंद्रिय संबंधी रोगों में भी विशेष लाभदायक सिद्ध होता है। कुछ लोगों का तो ऐसा विश्वास है कि तुलसी स्त्री वाचक पौधा है और कथाओं में उसे विष्णु की प्रिया भी कहा गया है, इससे वह स्त्री रोगों को दूर करने और उनके स्वास्थ्य संवर्द्धन में विशेष सहायक होते हैं।

(१) स्त्रियों के मासिक धर्म रुकने पर तुलसी के बीजों का प्रयोग लाभदायक होता है। तुलसी पंचांग (पत्ते, मंजरी, बीज, लकड़ी और जड़) सौंठ, नीबू की छाल का गूदा, अजवायन, तालीश पत्र,

इन सबका जौकुट, इसमें से एक तोला लेकर पावभर पानी में काढ़ा बनाएँ। जब चौथाई पानी रह जाए तो छानकर पी लें। कुछ समय तक यह प्रयोग करने से रुका हुआ मासिक धर्म खुल जाता है।

(२) यदि रजोदर्शन (मासिक धर्म) के होने पर तुलसी के पत्तों का काढ़ा बनाकर तीन दिन तक पी लिया जाए तो गर्भ स्थापना की संभावना कम हो जाती है। यह प्रयोग गर्भ निरोध की दृष्टि से विशेष उपयोगी है क्योंकि यह प्रजनन अंगों को हानि नहीं पहुँचाता। यह उनको शुद्ध और दोषरहित करके शक्तिशाली बना देता है, इसलिए जिस प्रकार यह गर्भ निरोध का कार्य करता है, उसी प्रकार बंध्या स्त्रियों की संतानोत्पत्ति के लिए इनका प्रयोग किया जाता है। इस संबंध में एक प्राचीन ग्रंथ का वचन है—

या स्यान्मृत प्रजा नारी तस्या अंग प्रमार्जयेत।
सा पुत्र लभते दीर्घ जीवन चाप्यरोगिणाम्॥
वन्ध्या मार्जयेदङ्ग कुशैर्मन्त्रेण साधकाः।
साऽपि सम्वत्सरादेव गर्भधत्ते मनोहरम्॥

अर्थात, जिस स्त्री की संतानें जीवित न रहती हों उसके अंगों का तुलसी से मार्जन (शुद्ध) करने पर वह दीर्घजीवी और नीरोग पुत्र उत्पन्न करती है। यदि बंध्या स्त्री का तुलसी एवं कुशातंत्र से मार्जन किया जाए तो उसके भी एक वर्ष के भीतर सुंदर पुत्र उत्पन्न होता है।

इससे विदित होता है कि तुलसी का विधिपूर्वक प्रयोग और श्रद्धापूर्वक पूजन आदि करने से शारीरिक और मानसिक दोष दूर होकर प्रजनन अंग गर्भ धारण के योग्य हो जाता है, उस अवस्था में पत्तों के काढ़े के बजाए बीजों का चूर्ण और शरबत भी उपयोगी होता है। पहले कुछ समय तक काढ़े का उपयोग करके अंगों को फिर शुद्ध किया जाए और फिर बीजों के प्रयोग से गर्भाशय को शक्तिशाली बनाया जाए तो संतानोत्पत्ति की संभावना निश्चित रूप से बढ़ सकती है।

(३) गर्भिणी स्त्री की छाती और पेट की खुजली के लिए वन तुलसी के बीजों का लेप करने से आराम होता है।

(४) तुलसी के बीज और आमा हलदी समान मात्रा में लेकर बारीक पीसकर जननेंद्रिय पर छिड़कने से योनिभ्रंश-जननेंद्रिय का स्थान च्युत हो जाने की अवस्था में लाभप्रद होता है। गर्भावस्था में पेट के अधिक बढ़ जाने से पेडू पर जो दरार सी पड़ जाती हैं और जिनमें कभी-कभी खुजली चलने लगती है, वे तुलसी के पिसे हुए पत्तों की पुल्टिस सी बनाकर मलने से ठीक हो जाती हैं।

(५) तुलसी के रस में जीरा पीसकर उसे गाय के धारोष्ण दूध के साथ सेवन किया जाए तो प्रदर रोग में सुधार होकर स्त्री का स्वास्थ्य ठीक हो जाता है।

(६) प्रसव के समय तीव्र वेदना होने पर तुलसी का रस एक तोला पिलाने से लाभ होता है और गर्भस्थ शिशु के बाहर निकलने में सरलता होती है। तुलसी की जड़ स्त्री की कमर में बाँधने से प्रसव का कष्ट मिटकर सुखपूर्वक संतान उत्पन्न होती है।

बच्चों के रोग

छोटे बच्चों के रोगों में तुलसी बहुत सौम्य तथा निरापद औषधि के रूप में व्यवहार की जाती है, इससे बच्चों के ज्वर, खांसी, दूध पलटना, श्वांस आदि रोगों में शीघ्र आराम होता है।

(१) बच्चों को शीतला निकलने पर तुलसी की मंजरी, अजवाइन और अदरक समभाग लेकर दिन में कई बार सेवन कराने से लाभ होता है।

(२) तुलसी पत्र एक तोला, मैथी एक तोला, कूट ६ माशा आधा पाव पानी में पकाएँ। जब चौथाई भाग शेष रह जाए तो छानकर, ठंडा करके पिलाएँ, यह शीतला ज्वर में हितकारी है।

(३) बच्चों को सरदी और खांसी की शिकायत होने पर तुलसी पत्र का रस अजवाइन और अदरक का रस पौन-पौन तोला लेकर खरल कर लें और ढाई तोला शहद मिलाकर शीशी में भर लें। इसमें से ३० से ६० बूँद तक दिन में तीन बार देने से लाभ होता है।

(४) तुलसी पत्र, बबूल की कोंपल, अजवाइन एक-एक तोला मिलाकर रख लें। इसमें ६ माशा लेकर १ छटांक जल में पकाएँ। जब चौथाई रह जाए तो छानकर बच्चों को पिलाएँ, इससे सब प्रकार के ज्वरों में लाभ होता है।

(५) बच्चों का पेट फूलने पर तुलसी का स्वरस अवस्थानुसार २ माशा तक पिलाने से आराम होता है।

(६) दांत निकलते समय बच्चों को जोर के दस्त लग जाते हैं, उसमें तुलसी के पत्तों का चूर्ण अनार के शरबत में देना लाभदायक होता है।

उदर रोगों पर

(१) तुलसी के ताजे पत्तों का रस एक तोला प्रतिदिन सुबह सेवन करने से अजीर्ण दूर होता है।

(२) तुलसी के पंचांग का काढ़ा बनाकर पीने से दस्तों में आराम होता है और पाचन शक्ति बढ़ती है।

(३) उपर्युक्त काढ़े में एक या दो रत्ती जायफल का चूर्ण मिलाकर पीने से दस्तों की कठिन बीमारी में शीघ्र आराम होने लगता है।

(४) तुलसी व अदरक का रस एक-एक चम्मच मिलाकर दिन में ३ बार पीने से पेट दरद में लाभ होता है।

(५) तुलसी के ग्यारह पत्ते लेकर एक माशा बायबिडंग के साथ पीस डालो, इसको सुबह-शाम ताजा पानी के साथ सेवन करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

(६) तुलसी और सहजने के पत्तों को छटांक भर रस में सेंधा नमक मिलाकर सेवन करने से मंदाग्नि मिटकर दस्त साफ होता है।

(७) सूखे तुलसी पत्र, सौंठ और गुड़ मिलाकर बड़ी गोलियाँ बना लें, इनको प्रतिदिन सेवन करने से दस्तों में लाभ होता है।

(८) तुलसी के सूखे पत्तों का चूर्ण एक माशा, ईसबगोल तीन माशा मिलाकर दही के साथ सेवन करने से पतले दस्तों में लाभ होता है।

फोड़ा, घाव और चर्म रोग

तुलसी में शोधक और कीटाणु नाशक गुण विशेष रूप से होते हैं। आधुनिक खोजों के अनुसार उसमें एक उड़नशील तेल रहता है, जिसकी गंध से कई प्रकार के हानिकारक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। चरक के विष-चिकित्सा में तुलसी का उल्लेख कई स्थानों पर किया गया है। इसमें जंतुघ्न तथा विषघ्न गुण बतलाए गए हैं। ततैया-बिच्छू आदि के काटने पर तुलसी-पत्र का प्रयोग किया जाता है। घाव पर तुलसी के सूखे पत्तों का चूर्ण छिड़कने से वे गंदे नहीं हो पाते और शीघ्र ही भरते हैं। पत्तों के काढ़े से धोना भी लाभदायक होता है। त्वचा के सभी रोगों जैसे दाद, खाज, झांई, मुँहासे आदि पर इसका प्रयोग लाभदायक सिद्ध होता है। चर्म रोगों की औषधियों में तुलसी का प्रयोग कर देने से उसकी शक्ति बहुत बढ़ जाती है और रोग अपेक्षाकृत शीघ्र ठीक हो जाता है।

हर प्रकार के घाव और फोड़ों पर तुलसी का प्रयोग बहुत लाभदायक होता है। तुलसी की लकड़ी को चंदन की तरह घिसकर फोड़ों पर लेप करने से शीघ्र आराम हो जाता है। तुलसी पत्र के काढ़े से धोने पर भी फोड़ों और घावों में लाभ होता है। अगर घाव में कीड़े पड़ गए हों और वह बदबू करता हो तो उसे काढ़े से धोने के बाद उस पर सूखे पत्तों का चूर्ण छिड़क देना चाहिए।

(१) तुलसी के पत्तों को नीबू के रस में पीसकर दाद पर लगाने से आराम होता है।

(२) तुलसी का रस दो भाग और तिली का तेल एक भाग मिलाकर मंद आग पर पकाएँ। ठीक पक जाने पर छान लें, इसके प्रयोग से खुजली और चर्म रोगों में भी लाभ होता है।

(३) अग्नि से जल जाने पर तुलसी का रस और नारियल का तेल फेंटकर लगाने से जलन मिट जाती है। यदि फफोला पड़ गया हो या घाव हो तो वह शीघ्र ठीक हो जाता है।

(४) तुलसी के पत्तों को गंगाजल में पीसकर निरंतर लगाते रहने से सफेद दाग कुछ समय में ठीक हो जाते हैं।

(५) बालतोड़ पर तुलसी पत्र और पीपल की कोमल पत्तियाँ पीसकर लगाने से आराम होता है।

(६) नाक के भीतर फुंसी हो जाने पर तुलसी पत्र तथा बेर को पीसकर सूँघने और लगाने से लाभ होता है।

(७) पेट के भीतर फोड़ा या गुल्म में तुलसी पत्र और सोया के शाक का काढ़ा बनाकर उसमें थोड़ा सैंधा नमक मिलाकर पीना चाहिए।

(८) तुलसी पत्र और फिटकरी को खूब बारीक पीसकर घाव पर छिड़कने से वह शीघ्र ही ठीक हो जाता है।

(९) बालों का झड़ना और असमय सफेद हो जाना भी एक चर्म विकार ही है, इसके लिए तुलसी पत्र और सूखे आँवले का चूर्ण सिर में अच्छी तरह मिलाकर सामान्य तापमान के पानी में धोना चाहिए।

(१०) काँख के फोड़े (कखौरी) पर तुलसी पत्र, राई, गुड़, गूगल समान मात्रा में पानी में पीसकर गरम करके बाँधने से वह फूटकर ठीक हो जाता है।

(११) तुलसी के पत्तों तथा जड़ में कीटाणुनाशक गुण विशेष रूप से पाया जाता है, उसका सभी प्रकार के चर्म रोगों में प्रयोग लाभदायक सिद्ध होता है। तुलसी के २०-२५ तोला पत्तों को पीसकर पानी मिलाकर उसका रस निकाल लें, फिर आधा सेर रस तथा तिली का तेल मिलाकर आग पर पकाएँ। पानी जल जाने पर तेल को छानकर बोतल में भर दिया जाए, इस तेल की मालिश से त्वचा संबंधी रोग खुजली, खुश्की आदि दूर हो जाती है।

उपर्युक्त तेल के प्रयोग के साथ प्रातःकाल तुलसी की जड़ तथा सौंठ का चूर्ण कुछ गरम पानी के साथ लगातार सेवन करते रहने से कोढ़ जैसा भयंकर रोग भी दूर हो जाता है। एक प्रसिद्ध चिकित्सक ने लिखा है कि एक संन्यासी ने लगातार एक साल तक तुलसी का रस पिलाकर एक ऐसे कुष्ठ रोगी को स्वस्थ किया था, जिसका रोग काफी बढ़ चुका था और अँगुलियाँ गलने लगी थीं।

(१२) तुलसी में रक्त साफ करने का गुण है, जिसके कारण इसका प्रयोग सब प्रकार के खून फिसाद के रोगी, फोड़े, फुंसी, खाल पर चकत्ता पड़ना आदि को दूर करने की सामर्थ्य रखता है। इस प्रयोग के लिए किसी तांबे के बरतन में आधा पाव नींबू का रस भर दें फिर तुलसी और काली कसौंदी में से प्रत्येक का उतना ही रस मिला दें। बरतन को धूप में रखने से रस सूखने लगेगा। कई दिन में सूखकर जब यह गाढ़ा हो जाए तो चेहरे पर लगाने से झाँई-मुँहासे, काले दाग-धब्बे मिटकर चेहरा साफ और सुंदर हो जाता है। इसके लगातार प्रयोग से शरीर के किसी भी अंग पर पड़े सफेद दाग भी मिट जाते हैं।

(१३) तुलसी के पत्तों को नींबू के रस में मिलाकर लगाते रहने से दाद मिट जाता है।

(१४) तुलसी और नीम के पत्तों को दही में पीसकर लगाने से भी दाद ठीक हो जाता है।

मस्तिष्क और स्नायु संबंधी रोग

मस्तिष्क और ज्ञान तंतुओं की प्रक्रिया बहुत गूढ़ और सूक्ष्म होती है और उसमें किसी प्रकार की खराबी आ जाने से सिर में चक्कर आना, स्मरण शक्ति का ह्रास, घबराहट, मूर्च्छा, मृगी, उन्माद जैसे भयंकर दोष उत्पन्न हो जाते हैं। इन सब रोगों की चिकित्सा भी बहुत कठिन होती है और डॉक्टर तथा वैद्य जो तीव्र औषधियाँ देते हैं, वे थोड़ा-सा तात्कालिक लाभ भले ही दिखा दें, पर अंत में मस्तिष्क शक्ति को और भी खराब और नष्ट करने वाली सिद्ध होती हैं। तुलसी का सेवन ऐसी अवस्था में अमृतोपम कार्य करता है, क्योंकि वह भी एक सूक्ष्म प्रभाव युक्त दिव्य बूटी है और श्रद्धा तथा उपासना का संबंध होने से वह मानसिक संस्थान पर इच्छित असर भी डाल सकती है। इससे मस्तिष्क संबंधी शिकायतों तथा निर्बलता में तुलसी का प्रयोग सर्वश्रेष्ठ है। 'तुलसी कवच' में भी इसकी जो महिमा वर्णित है उसके गूढ़ आशय पर ध्यान देने से प्रतीत होता है कि तुलसी के संपर्क में आने और

भक्तिपूर्वक उसको प्रसादरूप में ग्रहण करने का प्रभाव हमारी ज्ञानेंद्रियों पर बहुत कल्याणकारी पड़ता है और मस्तिष्क, आँखें, कान, नाक, जिह्वा, कंठ आदि सभी स्थानों के दोष दूर होकर विकसित होते हैं।

(१) स्वस्थ अवस्था में भी तुलसी के आठ-दस पत्ते और चार-पाँच कालीमिर्च बारीक घोंट-छानकर सुबह लगातार पिया जाए तो मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है। यदि चाहें तो दो-चार बादाम और इसमें थोड़ा शहद मिलाकर ठंडाई की तरह बना सकते हैं।

(२) प्रातःकाल स्नान करने के पश्चात तुलसी के पाँच पत्ते जल के साथ निगल लेने से मस्तिष्क की निर्बलता दूर होकर स्मरण शक्ति तथा मेधा की वृद्धि होती है।

(३) मृगी रोग में तुलसी के ताजे पत्ते नीम के साथ पीसकर उबटन की तरह लगाने से बहुत लाभ पहुँचता है, यह प्रयोग नियमित रूप से लगातार बहुत समय तक करना चाहिए।

(४) तुलसी के पत्ते और ब्राह्मी पीसकर छानकर एक गिलास नित्य सेवन करने से मस्तिष्क की दुर्बलता से उत्पन्न उन्माद ठीक हो जाता है।

(५) तुलसी के रस में थोड़ा नमक मिलाकर नाक में दो-चार बूँद टपकाने से मूर्च्छा और बेहोशी में लाभ होता है।

(६) तुलसी का श्रद्धापूर्वक नियमित सेवन सभी ज्ञानेंद्रियों की क्रिया को शुद्ध करके उनकी शक्ति को बढ़ाता है।

दांतों की पीड़ा

(१) दांतों में दरद होने पर तुलसी के पत्ते और कालीमिर्च पीसकर गोली बनाकर दरद के स्थान पर रखने से आराम होता है।

(२) तुलसी के पंचांग को कूटकर तोला भर आधा सेर पानी में पकाएँ, आधा पानी जल जाने पर उतार लें, इससे कुल्ला करने पर दांतों का दरद मिटता है।

सिर दरद

(१) सिर पीड़ा में तुलसी के सूखे पत्तों का चूर्ण अथवा तुलसी के बीजों का चूर्ण कपड़े में छानकर सूँघनी की तरह सूँघने से आराम होता है।

(२) तुलसी पत्र ३५, सफेद मिर्च १, तुरिया १० नग, इनको जल में पीस रस निकालकर नित्य लेने से पुराना सिर दरद दूर हो जाता है।

(३) तुलसी पत्र और दो-तीन कालीमिर्च पीसकर रस निकालकर नस्य लेने से आधा शीशी का दरद दूर हो जाता है।

(४) वन तुलसी का फूल और कालीमिर्च को जलते कोयले पर डालकर उसका धुँआ सूँघने से सिर का कठिन दरद ठीक हो जाता है।

(५) श्यामा तुलसी की जड़ को चंदन की तरह घिसकर लेप करने से दरद मिटता है।

गठिया और जोड़ों का दरद

(१) तुलसी में वात विकार को मिटाने का गुण पाया जाता है। इसलिए यदि बात की प्रबलता से नाड़ियों में दरद जान पड़े तो उसमें तुलसी के काढ़े का प्रयोग हितकारी होता है। यदि जोड़ों में दरद होता हो तो तुलसी के पत्रों का रस पीते रहने से लाभ होता है। मोच और चोट पर तुलसी के स्वरस की मालिश करने से आराम होता है।

(२) तुलसी की जड़, पत्ते, डंठल, मंजरी और बीज, इन पाँचों को समान भाग लेकर कूट-छानकर ६ माशा की मात्रा में उतने ही पुराने गुड़ के साथ मिला लें। इसको प्रातः-सायं दोनों समय बकरी के दूध के साथ सेवन करने से गठिया का रोग दूर हो जाता है।

(३) वन तुलसी के पंचांग को पानी में उबालकर उसका भफारा लेने से लकवा और गठिया में लाभ होता है।

विविध रोग

(१) किसी प्रकार के विष जैसे अफीम, कुचला, धतूरा आदि खा जाने पर तुलसी के पत्रों को पीसकर गाय के घी में मिलाकर पीने से आराम होता है। घी की मात्रा अवस्था के अनुसार पावभर से आधा सेर तक हो सकती है। एक बार में आराम न हो तो बार-बार तुलसी घृत पिलाना चाहिए।

(२) तृषा रोग में तुलसी के रस में नींबू तथा मिश्री मिलाकर और थोड़ा पानी डालकर शरबत की तरह सेवन करने से लाभ होता है।

(३) दिन में दो बार, विशेषकर भोजन के घंटे, आधे घंटे बाद तुलसी के चार-पाँच पत्ते चबा लेने से मुख में दुर्गंध आना बंद हो जाता है।

(४) तुलसी पत्र, हुरहुर के पत्ते, अमरबेल, ऊँट की मेंगनी, इन सबको गौमूत्र में पीसकर और पकाकर बढ़े अंडकोष के ऊपर गाढ़ा लेप करने से लाभ होता है।

(५) चारपाई में खटमल हो जाने पर वन तुलसी की डाली रख देने से ये भाग जाते हैं। इन डालों को घर में रखने से मच्छर, छछूंदर व सांप नहीं आते, ये सब जीव वन तुलसी की गंध को सहन नहीं कर सकते।

(६) छाती, पेट तथा पिंडलियों में जलन का अनुभव होने पर तुलसी की पत्ती और देवदारू की लकड़ी घिसकर चंदन की तरह लेप कर देना लाभदायक होता है।

(७) गले के दरद में तुलसी के पत्तों का रस शहद में मिलाकर चाटना चाहिए।

(८) पेचिश, मरोड़ और आँव आने की शिकायत होने पर तुलसी पत्र सूखा दो माशा, काला नमक एक माशा, आधा पाव दही में मिलाकर सेवन करें।

(९) बवासीर के लिए तुलसी की जड़ तथा नीम की निबोरियों की मिंगी समान भाग लेकर पीसकर चूर्ण बना लें,

इसमें ३ माशा प्रतिदिन छाछ के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

(१०) पेट में तिल्ली बढ़ जाने पर तुलसी की जड़, नौसादर, भुना सुहागा और जवाखार बराबर लेकर समान भाग में पीसकर चूर्ण बना लें, इसमें २-३ माशा ताजा पानी के साथ सुबह खा लेने से आराम होता है।

(११) देह में पित्ती उठ आने पर तुलसी के बीज २ माशा आँवला के मुरब्बे के साथ मिलाकर सेवन करना चाहिए।

(१२) पसली में सरदी का दरद उठ आने पर तुलसी की पत्ती का रस ६ माशा और पोंहकर मूल का चूर्ण ३ माशा मिलाकर गरम करके दरद के स्थान पर लेप करें।

(१३) नेहरू या नेहरूआ की बीमारी में सूजन के स्थान पर तुलसी की जड़ को घिसकर लेप करना चाहिए। इससे कीड़े का २-३ इंच लंबा भाग बाहर निकल जाएगा, उसको बाँधकर अगले दिन फिर इसी प्रकार लेप करें। इस तरह २-३ दिन में पूरा कीड़ा बाहर निकल आता है और कुछ समय तक लेप करते रहने से घाव बिलकुल ठीक हो जाता है।

(१४) वन तुलसी के पत्ते हैजे में आश्चर्यजनक प्रभाव दिखलाते हैं। पत्तों के साथ बीज की गिरी, नीम की छाल, अपामार्ग (औंगा) के बीज, गिलोय, इंद्रजौ, इन सबको मिलाकर दो-तीन तोला, तीन पाव पानी में पकाएँ, जब आधा रह जाए तो तीन तोला की मात्रा थोड़ी-थोड़ी देर में देता चला जाए। इस प्रयोग से हैजा के कठिन रोगियों की प्राणरक्षा भी प्राय: हो जाती है।

सर्पदंश पर तुलसी का प्रयोग

(१) अनेक प्रदेशों में तुलसी को साँप काटने पर चिकित्सा के लिए प्रयोग में लाया जाता है। मध्यप्रदेश की कई आदिवासी जातियों में तुलसी के पत्तों को पीसकर तथा मक्खन मिलाकर साँप के काटे हुए स्थान पर लेप कर देते हैं। इसी प्रकार जब तक लेप काला पड़ता जाता है, तब तक उसे बदल कर नया लेप करते रहते

हैं। इस विधि से तुलसी के पत्ते समस्त विष को खींच लेते हैं। कुछ लोग साँप के काटे हुए व्यक्ति को एक मुट्ठी तुलसी के पत्ते खिला देते हैं और तुलसी को बारीक पीसकर मक्खन के साथ मिलाकर सर्पदंश के स्थान पर लेप किया जाता है। इस लेप को भी उपयुक्त लेप की तरह बार-बार बदलना पड़ता है, जिससे विष का प्रभाव दूर होकर रोगी की प्राणरक्षा हो जाती है।

(२) तुलसी के द्वारा सर्प विष की चिकित्सा की एक और विधि कुछ वर्ष पहले एक सामयिक पत्र में प्रकाशित हुई थी। रामकृष्ण मिशन के एक आश्रम में खबर आई कि पास के एक गाँव में किसी स्त्री को साँप ने काट लिया है। इस पर आश्रम के दो संन्यासी चिकित्सा के लिए भेजे गए। उस समय साँप के काटे हुए आठ घंटे हो गए थे। स्त्री लगभग मुरदा जैसी हो गई थी। चिकित्सा के लिए बहुत सी तुलसी और केले का तना मँगवाया गया। इन दोनों का रस निकालकर रोगी के मस्तक और छाती पर मला गया और दो तोला रस उसके मुख में डाला गया। यह प्रयोग पाँच-पाँच और दस-दस मिनट के अंतर से चालू रखा गया। अंत में ६-७ घंटे बाद रोगिणी को होश आया। उसके बाद उपचार की अन्य पद्धतियाँ भी अपनाई गईं। रोगी को एनिमा लगाकर दस्त भी कराया गया। लगभग चौबीस घंटे में उसे पूरा लाभ हो गया।

प्राचीन आयुर्वेद ग्रंथ में भी तुलसी की विषनाशक शक्ति का वर्णन मिलता है। 'चरक संहिता' में कहा गया है—

काकण्ड सुरसा गवाक्षो पुनर्नवायसो शिरीषफलै।
उद्‌बंध विषजलसृस लपोनस्य पाननि॥

अर्थात, साँप के विष में तुलसी, काकतिंतु, इंद्रायण, पुनर्नवा, मकोय और सरिस के बीजों को एक साथ पीसकर लगाएँ, नाक में टपका दें और कुछ भाग पिला दें।

(३) साँप के काटने पर बुबई तुलसी या बरबरी के बीजों को मुख में लेकर चबाना चाहिए। जब उसका लुआब बन जाए तो आधा भाग खा लिया और आधा काटने की जगह पर लेप कर दिया

जाए। पत्तों का रस निकालकर पाँच तोले की मात्रा में पिलाने से भी शीघ्र लाभ होता है।

तुलसी उपासना द्वारा मानसिक चिकित्सा

वर्तमान समय में मानसिक चिकित्सा में आत्मसंकेत (ऑटो सजैशन) का बड़ा महत्त्व है। यदि कोई मनुष्य अपने स्वास्थ्य, विचार और मानसिक प्रवृत्तियों को श्रेष्ठ बनाने के लिए बार-बार किसी काम को मन में लाकर मुँह से कहे और वैसी ही कल्पना करे तो उसमें धीरे-धीरे उन विशेषताओं की वृद्धि होती रहती है। जो उद्देश्य आधुनिक विचारों के व्यक्ति 'ऑटो सजैशन' से पूरा करते हैं, उसी को हमारे यहाँ के प्राचीन मनीषियों ने देवताओं की प्रार्थना-स्तुति कवच आदि के माध्यम से प्राप्त करने की विधि निकाली थी। इन दोनों मार्गों की भली प्रकार परीक्षा करने के उपरांत हम कह सकते हैं कि सामान्य स्तर के लोगों के लिए दूसरा मार्ग ही अधिक लाभदायक है, क्योंकि किसी स्थूल पदार्थ को आधार बनाकर प्रयुक्त किया जाता है, पर पहली विधि जो केवल मानसिक भावनाओं और किसी निराकार शक्ति पर आश्रित रहती है, वह अधिक विचारशील प्राणी, जिनकी संख्या अपेक्षाकृत थोड़ी ही रहती है, के द्वारा काम में लाई जा सकती है।

यद्यपि आज अन्य धर्म कृत्य, पूजा, उपासना आदि के समान स्तोत्र और कवच आदि भी रूढ़ि मात्र बन गए हैं और बिना अर्थ को समझे, बिना किसी प्रकार की भावना के तोता की तरह रट लिए जाते हैं। इस प्रकार लकीर पीटने से अगर कोई लाभ दिखाई न दे तो इसमें आश्चर्य ही क्या? अन्यथा जो प्रार्थना व स्तुति भावपूर्वक दृढ़ विश्वास और श्रद्धा के साथ की जाती है, उसका कोई प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष फल मिलना अनिवार्य है।

तुलसी कवच

इस दृष्टि से तुलसी कवच हमको एक बड़ी अच्छी स्तुति प्रतीत होती है। इसमें तुलसी की अंतर्निहित शक्ति की एक दैवी व्यक्तित्व के रूप में भावना करते हुए उससे सिर से लेकर पैरों तक

प्रत्येक अंग की रक्षा करने की, उन्हें स्वस्थ और कार्यक्षम स्थिति में रखने की प्रार्थना की गई है। एक तो तुलसी के समीप का वातावरण ही स्वास्थ्य प्रदायक तत्त्वों से युक्त और मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालने वाला होता है और उसके साथ ही यदि हम उसे दैवी विभूति मानकर अपने स्वास्थ्य तथा कल्याण के लिए प्रार्थना करते हैं, तो ऐसी स्तुति अवश्य ही एक सर्वोत्तम 'ऑटो सजैशन' का काम दे सकती है। नीचे हम 'ब्रह्मांड पुराण' में दिए 'तुलसी माहात्म्य' में से 'तुलसी कवच' के कुछ श्लोक उद्धत करते हैं। पाठक देखेंगे कि उसमें किस प्रकार मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति की कामना और भावना संबंधी प्रेरणाएँ भरी हुई हैं।

तुलसी श्रीमहादेवि नमः पंकज धारिणी।
शिरोमे तुलसी पातु भालं पातु यशस्विनी॥
दृर्गो मे पद्मनयना श्रीसखी श्रवणो मम।
घ्राण पातु सुगन्धमे नखं च सुमुखी मम॥

तुलसी के उपरोक्त विभिन्न नामों का उल्लेख करते हुए उपासक उससे प्रार्थना करता है—"कमल पुष्प को धारण करने वाली श्रीतुलसी देवी को मैं भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। तुलसी के रूप में मेरे सिर की, यशस्विनी रूप में मेरे मस्तक की रक्षा करें। 'पद्म नयना' नाम देने वाली मेरे नेत्रों की, श्री सखी नाम से मेरे कानों की, 'गंधम्' नाम से मेरी नासिका की और 'सुमुखी' नाम से मेरे मुख की रक्षा करें।"

जिह्वां मे पातु शुभदा कण्ठ विद्यामयो मम।
स्कन्धौ कल्हारिणि पातु हृदयं विष्णु वल्लभा॥
पुण्यदा मातु मे मध्यं नाभि सौभाग्य दायिनी।
कटि कुण्डलिनी पातु ऊरु नारद वन्दितः॥

'शुभदा' मेरी जिह्वा की रक्षा करे। 'विद्यामयी' कंठ की, 'कल्हारिणी' कंधों की, 'विष्णु वल्लभा' हृदय की, 'पुण्यदा' मध्य भाग (धड़) की, 'सौभाग्यदायिनी' नाभि की, 'कुण्डलिनी' कमर की और 'नारद वंदिता' मेरे उरु प्रदेश की रक्षा करती रहे।

जननी जानुनी पातु जंघे सकल वन्दिता।
नारायण प्रिया पादौ सर्वांग सर्वरक्षिणी॥
सङ्कटे विषमे दुर्गे भये वादे महाहवे।
नित्ये साध्ययौ पातु तुलसी सर्वदः सदा॥

'जननी' धातुओं की, 'सकल वंदिता' जंघाओं की, 'नारायण प्रिया' पैरों की और 'सर्व रक्षिणी' मेरे सर्वांग की रक्षा करें। 'दुर्गा' घोर संकट से और 'महाहवे' भय और विरोधियों से बचाएँ। 'संध्या रूपिणी' नित्य रक्षा करती रहें और तुलसी देवी सदैव कुशल से रखें।

इतीदं परम गुह्यं तुलस्या कवचामृतम्।
मृत्यान ममृतार्थाय भीतानाम भयाय च॥
मौक्षाय च मुमुक्षाणां ध्यानिनां ध्यानयोगकृत।
वशाय विश्वकामनां विद्यावै वेदवादिकाम्॥

यह 'तुलसी कवच' अत्यंत गुह्य है, जिसके प्रभाव से मरणासन्न व्यक्ति मृत्यु के आतंक से और भयभीत सब प्रकार के भयों से परित्राण पा जाते हैं। इसके द्वारा मोक्षाभिलाषियों को मोक्ष की प्राप्ति होती है, योगाभिलाषियों को ध्यान में सुदृढ़ता मिलती है, सांसाराभिलाषियों की कामनाएँ पूर्ण होती हैं और ज्ञानाभिलाषियों को विद्या की प्राप्ति होती है।

द्रविणाम दरिद्राणां पापिना पाप शान्तय।
अन्नाय क्षूधितानां च स्वर्गमिच्छताम्॥
भक्तर्थ विष्णु भक्तानां विष्णो सर्वान्तिरात्मनि।
जाप्य त्रिवर्ग सिद्धयर्थ गृहस्थेन विशेषतः॥

'दीन-दरिद्र' व्यक्तियों को संपत्ति मिलती है, दुष्कर्म ग्रस्तों की पाप कर्मों में से प्रवृत्ति मिट जाती है, भूखों को अन्न की और स्वर्गाभिलाषियों को स्वर्ग की प्राप्ति होती है और गृहस्थों को त्रिवर्ग की प्राप्ति होती है।

यद्यपि यह 'तुलसी कवच' एक स्तोत्र के समान ही है, तो भी इसका यदि श्रद्धापूर्वक तन्मयता के साथ पाठ किया जाए और इसमें

दिए गए शारीरिक तथा मानसिक उन्नति के संकेतों को प्रयत्नपूर्वक हृदयंगम किया जाए तो शारीरिक स्वास्थ्य तथा मानसिक स्थिति पर उसका कल्याणकारी प्रभाव पड़ना असंभव नहीं है। शरीर और मन की उन्नति होने से अन्य सांसारिक विषयों और जीवन निर्वाह संबंधी कार्यों पर भी उसका सुप्रभाव निश्चित है। इसलिए तोते की तरह रटा हुआ उच्चारण न करके अगर भावनापूर्वक ऐसी उपासना की जाएगी तो वह कई दृष्टि से लाभजनक अवश्य होगी।

तुलसी का प्रचार बढ़ाइए

यद्यपि आजकल भी भारतीयों की एक श्रेणी में 'तुलसी पूजा' का बहुत प्रचार है, पर वह एक रूढ़ि मात्र रह गई है, इससे कोई विशेष लाभ नहीं होता। लोग उसे केवल 'पुण्य' और 'स्वर्ग' का साधन मानते हैं और इसलिए इस दिव्य बूटी के जो शारीरिक और मानसिक लाभ इस पुस्तिका में बतलाए गए हैं, वे उनको नाममात्र को ही प्राप्त होते हैं। पर वर्तमान बुद्धिवादी युग में आवश्यकता इस बात की है कि जिन धार्मिक नियमों का पालन हम अब तक परंपरा अथवा शास्त्रीय विधान के रूप में करते हैं, उनकी उपयोगिता तर्क और विज्ञान की दृष्टि से भी समझ ली जाए।

हमने इस पुस्तिका में तुलसी के गुणों और विशेषताओं का जो विवेचन किया है, उससे पाठक इसके महत्त्व को समझ गए होंगे, पर वह हमारे यहाँ इतना प्रचलित और हर जगह सुगमता से प्राप्त हो जाने वाला पौधा हो गया है कि लोगों ने इसे सामान्य वस्तु समझ लिया है। संस्कृत में एक कहावत है कि अति परिचय से हम किसी महत्त्वपूर्ण वस्तु या व्यक्ति के संबंध को भी मामूली समझने लग जाते हैं, वही बात इस समय तुलसी के संबंध में भी चरितार्थ हो रही है। हम भ्रमवश उसके अमूल्य गुणों को भूल गए हैं और जिन रोगों को उसके प्रयोग से बिना खरच के सहज में दूर किया जा सकता था, उनके लिए विदेशी कीमती दवाइयाँ लेकर व्यर्थ में हानि उठा रहे हैं। यदि हम वर्तमान समाज की रुचि और आवश्यकतानुसार तुलसी प्रचार का

कार्यक्रम बनाकर उसको कार्यान्वित करने का प्रयत्न करें तो सर्वसाधारण का बहुत उपकार हो सकता है। इस संबंध में जानकार व्यक्तियों ने सुझाव समय-समय पर दिए हैं, उनका सारांश नीचे दिया जा रहा है—

(१) अभी तुलसी के पौधे प्रायः थाँवला या गमलों में धार्मिक श्रद्धा की दृष्टि से ही लगाए जाते हैं और उसकी एक-दो पत्तियाँ प्रसाद या चरणामृत के रूप में सेवन कर ली जाती हैं, पर इस तरह चिकित्सा और रोग निवारण का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। तुलसी जब पर्याप्त मात्रा में ताजा और सूखा सर्वत्र मिल सके, तभी लोग उसका उपयोग कर सकते हैं। इसलिए तुलसी की बाकायदा खेती की जानी आवश्यक है।

(२) तुलसी के मिश्रण से और केवल तुलसी द्वारा आवश्यक औषधियाँ बनाकर तैयार रखने वाले औषधालय स्थापित किए जाएँ। जैसे च्यवनप्राश, द्राक्षासव आदि सर्वत्र तैयार मिलने से उनका प्रचार बढ़ गया है, उसी प्रकार तुलसी का शरबत, अवलेह, अरिष्ट, बटी, चूर्ण आदि को आधुनिक विधि से बनाकर बेचा जाए तो लोगों में उनका प्रचार हो सकता है।

(३) यह प्रचार का युग है और एक साधारण वस्तु भी विज्ञापन तथा प्रचार के द्वारा दुनिया भर में फैला दी जाती है। तुलसी के अनेक गुणों से संपन्न होने पर भी औषधि की दृष्टि से उनके गुमनाम स्थिति में रहने का मुख्य कारण यही है कि उसके प्रचार और परिचय की विधिवत चेष्टा नहीं की गई।

(४) देशी औषधियों और जड़ी-बूटियों के प्रचार में एक बाधा यह भी है कि उनको पैदा करने और उनके द्वारा औषधियाँ बनाने की ठीक व्यवस्था नहीं है। चिकित्सा शास्त्र में औषधियों को किसी नियत ऋतु में पूर्ण परिपक्व हो जाने पर ही संग्रह करने का नियम है। उसको सुरक्षापूर्वक ऐसे ढंग से रखा जाए कि उसके गुण नष्ट न हों। आजकल अनेक दुकानदार और वैद्य तो वर्षों पुरानी सड़ी-गली औषधियों को काम में ले आते हैं और फिर शिकायत

करते हैं कि आयुर्वेद औषधियाँ डॉक्टरी के समान तुरंत प्रभाव दिखलाने वाली नहीं होतीं। इस दृष्टि से तुलसी ऐसी कोमल और सूक्ष्म गुण युक्त बूटी है, जिसका गुण अनेक बार तो तीन मास में न्यून पड़ जाता है, इसलिए सब प्रकार की तुलसी का संग्रह सावधानीपूर्वक करके उसे जनसाधारण के लिए सुलभ बनाना आवश्यक है।

(५) जैसा हम लिख चुके हैं कि तुलसी डॉक्टरी इंजेक्शन की तरह कोई तीव्र औषधि नहीं, जो रोग को तुरंत दबा दे। यह तो स्वास्थ्य रक्षक और रोगों को रोकने वाली दैवी गुणयुक्त बूटी है, जिसका निरंतर सेवन करते रहने से शारीरिक दोष और बीमारी स्वयं ही दूर होते हैं। पहले जमाने के लोग मंदिरों में चरणामृत के रूप में नियमित रूप से इसे ग्रहण करते रहते थे, पर अब सामाजिक परिस्थिति बदल जाने से चरणामृत का स्थान चाय ने ले लिया है और तुलसी सेवन की प्रथा अधिकांश बंद हो गई है। इसके कारण कुछ सज्जनों ने 'तुलसी चाय' के निर्माण और चाय के प्रचार का सुझाव रखा है। कुछ संस्थाएँ इस काम को करने लगी हैं, पर अनुमान है कि उनकी चाय में अन्य औषधियों के मुकाबले में तुलसी का अनुपात न्यून रहता है, इसलिए यदि कुछ सुयोग्य व्यक्ति तुलसी में अन्य दो-चार बूटियाँ मिलाकर ऐसा पेय तैयार करें, जिसमें तुलसी के गुण पर्याप्त मात्रा में रहें तो इससे लोगों की स्वास्थ्य रक्षा में बहुत सहायता मिल सकेगी। कारण यही है कि चाय में स्फूर्ति उत्पन्न करने का गुण होने पर भी उसमें टैनिन नामक एक हानिकारक तत्त्व भी रहता है, पर कोई ऐसा दोष तुलसी की चाय में नहीं हो सकता।

(६) 'तुलसी कानन' अथवा 'तुलसी सैनीटोरियम' की योजना भी सब प्रकार से व्यावहारिक और जन कल्याणकारी है। वर्तमान समय में आवागमन की सुविधा हो जाने पर भी अधिकांश श्रेणी के व्यक्तियों के लिए आर्थिक दृष्टि से यह संभव नहीं कि वे पहाड़ों या दूरवर्ती स्थानों में जाकर स्वास्थ्य सुधार सकें, पर तुलसी सैनीटोरियम

ऐसी योजना है जो किसी भी गाँव में सौ-पचास गज लंबी-चौड़ी जमीन में कार्यान्वित की जा सकती है। यदि इतनी जमीन में तुलसी का बगीचा लगाकर दस व्यक्तियों के सुविधानुसार रहने लायक कुटिया बना दी जाए तो वहाँ पर स्थानीय लोग बहुत थोड़े व्यय में काम चला सकते हैं। यदि इस 'तुलसी कानन' के साथ प्राकृतिक चिकित्सा की कुछ विधियों का संयोग कर दिया जाए तो बड़े-बड़े रोगों को निर्मूल करने में ऐसी सफलता मिल सकती है, जैसी नामी सिविल सर्जनों को भी नसीब नहीं हो सकती। कोई भी लोकसेवी सज्जन इस कार्य को थोड़े साधन से ही करके पुण्य के भागी हो सकते हैं।

(७) तुलसी में वातावरण को शुद्ध बनाने की शक्ति है, उसकी तरफ लोगों का ध्यान भी बहुत कम गया है। इसका एक कारण यह भी है कि तुलसी को उगाने और उसकी अच्छी किस्म के पौधे तैयार करने की विधि न तो सबको आती है और न लोग इस झंझट में पड़ना चाहते हैं। हमने बहुत लोगों को तुलसी का पौधा लगाने की इच्छा करते देखा है, पर उसके लिए विशेष प्रयत्न न करने के कारण वे उसके लाभों से वंचित ही रह जाते हैं। इसलिए यदि कोई तुलसी के अच्छे पौधे तैयार करके उन्हें गमलों सहित मुफ्त में या उचित मूल्य लेकर लोगों को देने की व्यवस्था कर सकें तो उसका प्रचार बढ़ सकता है। यदि बंगले और कोठी वाले व्यक्ति अन्य पौधों के साथ दस-पाँच गमले तुलसी के रखें तो एक बड़ा हितकारी कार्य होगा, इससे हानिकारक कीटाणुओं, मच्छर-मक्खी आदि की वृद्धि रुक जाएगी और वातावरण में स्वास्थ्यदायक गुण पैदा हो जाएगा। साधारण लोग भी अपने घर में एक-दो पौधे तो आसानी से रख ही सकते हैं।

(८) धर्म प्रचारकों, पूजा-पाठ करने वाले पंडित, साधुओं का यह विशेष कर्त्तव्य है कि वे लोगों को तुलसी के गुणों से परिचित कराएँ और प्रेरणा दें कि तुलसी का पौधा अपने घर में अवश्य रखें। जो लोग 'तुलसी पूजा' या 'तुलसी विवाह' करते हैं, वे उसमें कुछ

समयानुकूल परिवर्तन करके तुलसी के दस-बीस या सौ-पचास गमलों में लगे उत्तम पौधे इष्ट-मित्रों तथा परिचितजनों को भेंट करें तो यह तुलसी की भक्ति के साथ एक बड़ा लोकोपयोगी कार्य भी होगा।

(९) तुलसी की कृषि को आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी बनाने का प्रयत्न किया जाए। तुलसी के पत्तों की तरह-तरह की औषधियाँ और चाय बनाने के अतिरिक्त उसके बीज वीर्य संबंधी रोगों के लिए बहुत उत्तम औषधि और टॉनिक के रूप में व्यवहृत किए जा सकते हैं। इसलिए उनकी खपत काफी बढ़ सकती है और एक लाभदायक व्यापार किया जा सकता है। तुलसी की मालाओं की भी पर्याप्त माँग है और तुलसी की असली माला अच्छे दामों में बिक सकती है।

इस प्रकार और भी कई सुझाव हो सकते हैं। धर्मप्रेमी, समाजसेवी स्वयं अपने-अपने साधनों तथा परिस्थिति के अनुकूल कोई उपाय सोचकर उसे कार्यान्वित कर सकते हैं।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा